

## सूरह हूद - 11

سُورَةُ هُودٍ

यह सूरह मक्की है, इस में 123 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, रा। यह पुस्तक है जिस की आयतें सुदृढ़ की गयीं, फिर सविस्तार वर्णित की गयी हैं उस की ओर से जो तत्वज्ञ सर्वसूचित है।
2. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।
3. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
4. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।
5. सुनो! यह लोग अपने सीनों को

الرَّكَيبُ أَحْكَمْتُ آيَاتِهِ ثُمَّ قُضِلَتْ مِنْ كُدُنٍ حَكِيمٍ  
خَبِيرٍ

أَلَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ

وَأَنْ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُغْفِرْ لَكُمْ مَتَاعًا  
حَسَنًا إِلَىٰ آجِلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ  
فَضْلَهُ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ  
يَوْمٍ كَبِيرٍ

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

أَلَا إِنَّهُمْ يَمْتَنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ أَلَا لَيْسَ

मोड़ते हैं, ताकि उस<sup>[1]</sup> से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँपते हैं, तब भी वह (अल्लाह) उन के छुपे को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला<sup>[2]</sup> है जो सीनों में (भेद) है।

6. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है। तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।<sup>[3]</sup>
7. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफिर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।
8. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो

يَنْقُتُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُونَ مَا يُبْسِرُونَ وَمَا يَحْتَفِلُونَ  
إِنَّهُمْ عَلَيْهِمْ مُّذَاتٍ الصُّدُورِ ①

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّمَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ②

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ  
آيَاتٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ  
أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَعْبُودُونَ مِنْ  
بَعْدِ الْبُوتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا  
إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ③

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَى آتَةٍ مَعْدُودَةٍ

1 अर्थात् अल्लाह से।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मिश्रणवादी अपने दिलों में कुफ़र को यह समझ कर छुपाते हैं कि अल्लाह उसे नहीं जानेगा। जब कि वह उन के खुले छुपे और उन के दिलों के भेदों तक को जानता है।

3 अर्थात्: अल्लाह, प्रत्येक व्यक्ति की जीवन मरण आदि की सब दशाओं से अवगत है।

अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज़ रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरेगी नहीं। और उन्हें वह (यातना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।

9. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताशा कृतघ्न हो जाता है।

10. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेगा कि मेरा सब दुःख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़ने लगता है।<sup>[1]</sup>

11. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और सुकर्म किये, तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

12. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले हैं और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले हैं। और अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ पर रक्षक है।

13. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (क़ुरआन) को स्वयं बना लिया है?

لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِبُهُ إِلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَئْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

وَلَيَنْ أَذَقْنَاهُ الْإِنْسَانَ مِثْلَ حَمِئَةٍ ثُمَّ نَرْغَبْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْكُمْ نَفُورًا ۝

وَلَيَنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ صَرَاءَ مَسْتَهْ لَيَقُولُنَّ ذَهَبَ النَّيِّاتُ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كُتْرٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِثْلِهِ

1 इस में मनुष्य की स्वभाविक दशा की ओर संकेत है।



आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ<sup>[1]</sup>, और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।

14. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुर्आन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई वंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?

15. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।

16. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे हैं असत्य सिद्ध होने वाला है।

17. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण<sup>[2]</sup> रखता हो, और

مُفْتَرِيَةٍ وَاذْعُوَامِنْ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ  
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

فَأَلَمْ يَنْتَجِبُوا أَنْ يَكُونُوا أَعْلَمُوا أَنَّهَا أَنْزَلُ بِعِلْمِ اللَّهِ  
وَأَنَّ لِلَّهِ الْإِلَهَ الْأَوْفُكَهُلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ  
أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُخْسِرُونَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ  
وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلْ مَا كَانُوا  
يَعْمَلُونَ ۝

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ يَتْنَةٍ مِنْ رَبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ

1 अल्लाह का यह चैलन्ज है कि अगर तुम को शंका है कि यह कुर्आन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं बना लिया है तो तुम इस जैसी दस सूरतें ही बना कर दिखा दो। और यह चैलन्ज प्रलय तक के लिये है। और कोई दस तो क्या इस जैसी एक सूरह भी नहीं ला सकता। (देखिये: सूरह यूनस, आयत: 38, तथा सूरह बकरा, आयत: 23)

2 अर्थात् जो अपने अस्तित्व तथा विश्व की रचना और व्यवस्था पर विचार कर के यह जानता था कि इस का स्वामी तथा शासक केवल अल्लाह ही है, उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता।

उस के साथ ही एक गवाह (साक्षी)<sup>[1]</sup> भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्ग दर्शक तथा दया बन कर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस(कुर्आन) पर ईमान रखते हैं। और संप्रदायों में से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अतः आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

18. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे? वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे, और साक्षी (फरिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोले। सुनो! अत्याचारियों पर अल्लाह की धिक्कार है।

19. वही लोग अल्लाह की राह से रोक रहे हैं, और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।

20. वह लोग धरती में विवश करने वाले नहीं थे। और न उन का अल्लाह के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।

21. उन्होंने ने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया, और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।

مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبْتُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ قَالُوا مَوْعِدُهُمْ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ آلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانْ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ يُضَعِفُ لَهُمْ الْعَذَابَ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

1 अर्थात् नबी और कुर्आन।



22. यह आवश्यक है कि परलोक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।

23. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।

24. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो, और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते? <sup>[1]</sup>

25. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रसूल बना कर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।

26. कि इबादत (वंदना) केवल अल्लाह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुःख दायी दिन की यातना से डरता हूँ।

27. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफिर हो गये, कहा: हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं। और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٢٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبْتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَبْصَرِ وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ إِلَينِ ﴿٢٦﴾

فَقَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَأْتِيكَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا شَرَكُكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا لَنَا بَأْدَىٰ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَحْنُ لَكُمْ كَذِبِينَ ﴿٢٧﴾

1 कि दोनों का परिणाम एक नहीं हो सकता। एक को नरक में और दूसरे को स्वर्ग में जाना है। (देखिये: सूरह, हश्र आयत: 20)

28. उस (अथात् नूह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया<sup>[1]</sup> प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें सुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका<sup>[2]</sup> दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?
29. और हे मेरी जाति के लोगों! मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं, निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो।
30. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अल्लाह की पकड़ से<sup>[3]</sup> मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?
31. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोषागार (खज़ाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी

قَالَ يَقَوْمِ آءَايْتُمْ إِن كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي  
وَأَتَيْنِي رَحْمَةً مِّن عِندِي فَعَمِيَّتْ عَلَيْكُمْ  
أَنْزِلُكُمْ مِّنْهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كِرْهُونَ ۝

وَيَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَآلِئُ أَجْرِي إِلَّا عَلَى  
اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُّلتَقُوا رَبَّهُمْ  
وَلَكِنِّي أَرْسَلَكُمْ قَوْمًا يَّجْهَلُونَ ۝

وَيَقَوْمِ مَن يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُّهُمْ أَفَلَا  
تَذَكَّرُونَ ۝

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ  
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ  
تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ  
بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لِّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝

1 अर्थात् नबूवत और मार्गदर्शन।

2 अर्थात् मैं बलपूर्वक तुम्हें सत्य नहीं मनवा सकता।

3 अर्थात् अल्लाह की पकड़ से, जिस के पास ईमान और कर्म की प्रधानता है, धन-धान्य की नहीं।

आँखें घृणा से देखती हैं अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

32. उन्होंने ने कहा: हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देते हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

قَالُوا يَنْوُحُ قَدْ جَادَلْتَنَا أَكْثَرَ إِذْ جَاءَنَا فَأَيُّنا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

33. उस ने कहा: उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ۝

34. और मेरी शुभ चिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हित चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपथ करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَصِیٌّ إِنْ آرَدْتُمْ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

35. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَيْنَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَیَّ إِجْرَائِیْ وَأَنَا بَرِئٌ مِمَّا تَجْرُمُونَ ۝

36. और नूह की ओर वही (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अतः उस से दुखी न बनो जो वह कर रहे हैं।

وَأَوْحِیْ إِلَى نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

37. और हमारी आँखों के सामने हमारी

وَاصْنَعِ الْفُلْکَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحِّیْنَا وَلَا تَجْأَطِبْغِی



वही के अनुसार एक नाव बनाओ, और मुझ से उन के बारे में कुछ<sup>[1]</sup> न कहना जिन्होंने अत्याचार किये हैं। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

38. और वह नाव बनाने लगा, और जब भी उस की जाति के प्रमुख उस के पास से गुज़रते, तो उस की हँसी उड़ाते। नूह ने कहा: यदि तुम हमारी हँसी उड़ाते हो तो हम भी ऐसे ही (एक दिन) तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।

39. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर अपमान कारी यातना आयेगी। और स्याई दुख किस पर उतरेगा?

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया, और तबूत उबलने लगा तो हम ने (नूह से) कहा: उस में प्रत्येक प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो। और अपने परिजनों को, उन के सिवा जिन के बारे में पहले बता दिया गया है, और जो ईमान लाये हैं। और उस के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

41. और उस (नूह) ने कहा: इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही से इस का चलना तथा इसे रुकना है। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

42. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची लहरों में चलती रही। और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से अलग था: हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार

فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ﴿٣٨﴾

وَيَصْنَعُ الْفُلَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ تَسَخُّرًا مِنْهُ قَالَ إِنَّ تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٩﴾

سَوْفَ نَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٤٠﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ مِثْلَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤١﴾

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ جَرِّهَا وَرُمْسَهَا إِن ربي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤٢﴾

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَبْنَىٰ اِرْكَبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

1 अर्थात् प्रार्थना और सिफारिश न करना।

हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहा।

43. उस ने कहा: मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूँगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहा: आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आड़े आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

44. और कहा गया: हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू थम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया, और नाव "जूदी"<sup>[1]</sup> पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया से) दूरी है।

45. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहा: मेरे पालनहार! मेरा पुत्र मेरे परिजनो में से है। निश्चय तेरा वचन सत्य है, तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

46. उस (अल्लाह) ने उत्तर दिया: वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मि है। अतः मुझ से उस चीज़ का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

47. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से

قَالَ سَأُوْنِيْ اِلَى جَبَلٍ يَّعَصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ۖ قَالَ لَوْ عَصَيْتَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ الْاَمْنُ وَرَجْعٌ وَّحَالٌۢ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمَغْرُوْبِيْنَ ۝

وَقِيْلَ يَا اَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكَ وَيسْمَاۗءُ اقْلَعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءِ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاَسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيْلَ بَعْدَ الْاَلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝

وَنَادٰى نُوحٌ رَّبَّهٖ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ اِبْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ۝

قَالَ يٰ نُوحُ اِنَّكَ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرٌ صَالِحٌ فَلَا تَسْئَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ اِنَّ اَعْظَمَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝

قَالَ رَبِّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ

1 "जूदी" एक पर्वत का नाम है जो कुर्दिस्तान में "इब्ने उमर" द्वीप के उत्तर-पूर्व और स्थित है। और आज भी जूदी के नाम से ही प्रसिद्ध है।



ऐसी चीज़ की मांग करूँ जिस (की वास्तविकता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।<sup>[1]</sup> और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْۤ اٰتٰنَا الْحِكْمَۃَ وَتَرَحَّمْتَ عَلٰى خٰلِقِيْنَۚ ۝۱۱

48. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْۤ اٰتٰنَا الْحِكْمَۃَ وَتَرَحَّمْتَ عَلٰى خٰلِقِيْنَۚ ۝۱۱

49. यह ग़ैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (वह्नी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अतः आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

تِلْكَ مِنْۢ اٰتِآءِ الْغَيْۢبِ نُوۡحِۡۤىۡۤ اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُۙ اَنتَ وَاَقۡوَمُكَ مِنْۢ قَبۡلِ هٰذَاۙ اٰتٰوۡنَاۤ اِلٰى الْعٰقِبَةِ الْمُتَّقِيْنَۙ ۝۱۲

50. और "आद" (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! अल्लाह की इबादत (बंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।<sup>[2]</sup>

وَ اِلٰى عَادِۙ اٰخَاهُمۡ هُوۡدٌۙ اٰتٰنَاۤ اِلٰى قَوۡمِۚ عٰبِدُوۡا اللّٰهَ مَا لَكُمۡ مِنْۢ اِلٰهٍ غٰیۡرُهٗ ۚ اِنَّ اَنْتُمْۤ اِلٰهَۤمۡ مُّفۡتَرُوۡنَ ۝۱۳

51. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता।

يَقُوۡمُۙ لَا اَسۡئَلُكُمْ عَلَیْهِۚ اَجۡرًاۚ اِنْ اَجۡرِیۡۤ اِلَّا عَلٰی

1 अर्थात् जब नूह (अलैहिस्सलाम) को बता दिया गया कि तुम्हारा पुत्र ईमान वालों में से नहीं है इस लिये वह अल्लाह के अज़ाब से बच नहीं सकता तो नूह तुरन्त अल्लाह से क्षमा माँगने लगे।

2 अर्थात् अल्लाह के सिवा तुम ने जो पूज्य बना रखे है वह तुम्हारे मन घड़त पूज्य है।



मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अल्लाह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।<sup>[1]</sup>

الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

52. हे मेरी जाति के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा माँगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी हो कर मुँह न फेरो।

وَيَقُومِ اسْتَغْفِرُكُمْ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَبِزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ۝

53. उन्होंने ने कहा: हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं है, और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं।

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

54. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहा: मैं अल्लाह को (गवाह) बनाता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرِكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوَّةٍ قَالَ إِنْ أَشْهَدُ اللَّهَ وَاشْهَدْ وَأَنَا بَرِيٌّ مِمَّا تَعْبُدُونَ ۝

55. उस (अल्लाह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षडयंत्र रच लो, फिर

مِنْ دُونِهِ يُكِيدُونَنِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنْظَرُونَ ۝

1 अर्थात् यदि तुम समझ रखते तो अवश्य सोचते कि एक व्यक्ति अपने किसी संसारिक स्वार्थ के बिना क्यों हमें रातो दिन उपदेश दे रहा है और सारे दुख झेल रहा है। उस के पास कोई ऐसी बात अवश्य होगी जिस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

मुझे कुछ भी अवसर न दो।<sup>[1]</sup>

56. वास्तव में, मैं ने अल्लाह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह<sup>[2]</sup> पर है।

57. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैं ने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है। और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी<sup>[3]</sup> और जाति को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज़ का रक्षक है।

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।

59. वही (जाति) "आद" है, जिस ने अपने पालनहार की आयतों (निशानियों) का इन्कार किया, और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أَرْسَلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا إِنَّا رَبُّنَا عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيزٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا بَنَيْنَاهُوهُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ رَحْمَةً مِنَّا وَبُخَيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

وَبَلَّغْنَاكَ آيَاتِنَا بِآيَاتِ رَسُولِكَ وَعَصَوْنَا أَمْرًا وَمُرَكَّبًا عَنِيدٍ ۝

1 अर्थात् तुम और तुम्हारे सब देवी-देवता मिल कर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। क्योंकि मेरा भरोसा जिस अल्लाह पर है पूरा संसार उस के नियंत्रण में है उस के आगे किसी की शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बिगाड़ सके।

2 अर्थात् उस की राह अत्याचार की राह नहीं हो सकती कि तुम दुराचारी और कुपथ में रह कर सफल रहो और मैं सदाचारी रह कर हानि में पड़ूँ।

3 अर्थात् तुम्हें ध्वस्त निरस्त कर देगा।

60. और इस संसार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जाति: आद के लिये दूरी<sup>[1]</sup> हो!

61. और समूद<sup>[2]</sup> की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अतः उस से क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है।<sup>[3]</sup>

62. उन्होंने ने कहा: हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज़ (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।

63. उस (सालेह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि

وَأُتْبِعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ  
أَلَا إِنَّ عَادَ أَكْفَرُ مِنْكُمْ وَالْأَبْدَانُ الْعَادِيَّةُ قَوْمٌ هُودٌ

وَالِ شُعَيْبٌ أَخَاهُ صَاحِبًا قَالَ يَقَوْمِ لَعْنَةُ اللَّهِ  
مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُهُ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ  
وَأَسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ تَوَلَّوْا إِلَيْهِ  
إِنْ رَأَيْتُمْ قَرَيْبًا مُجِيْبًا

قَالُوا يَصْلِحْ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَانَا  
أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ الْغَايَةَ شَكٌّ تَحْتَا  
نَدْعُونَ إِلَيْهِ مُرِيبًا

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي

1 अर्थात् अल्लाह की दया से दूरी। इस का प्रयोग धिक्कार और विनाश के अर्थ में होता है।

2 यह जाति तबूक और मदीना के बीच "अल-हिज्र" में आबाद थी।

3 देखिये: सूरह बकरा, आयत: 186।



यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो, तो कौन है जो अल्लाह के मुकाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।

وَأَتَيْنَاهُ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُنِي إِلَّا وَبْنِي عَذَابٍ خَيْرٍ ۝

64. और हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह<sup>[1]</sup> की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरो। और उसे कोई दुख न पहुँचाओ, अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।

وَلَقَوْمٌ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَمَنْ دَرَاهُنَا أَكَلُ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَتَّبِعُوا بَنُوهُ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝

65. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहा: तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।

فَعَصَوْا وَهَاقَال تَسْتَعْوَانِي دَارُكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْدُورٍ ۝

66. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمٍ إِذْ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝

67. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया, और अपने घरों में औधे पड़े रह गये।

وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جِثِيمِينَ ۝

1 उसे अल्लाह की ऊँटनी इस लिये कहा गया है कि उसे अल्लाह ने उन के लिये एक पर्वत से निकाला था। क्योंकि उन्होंने ने इस की माँग की थी कि यदि पर्वत से ऊँटनी निकलेगी तो हम ईमान लायेंगे। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

68. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे। सावधान! समूद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुन लो, समूद के लिये दूरी हो।

69. और हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास शुभसूचना ले कर आये। उन्होंने सलाम किया तो उस ने उत्तर में सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह एक भुना हुआ बछड़ा<sup>[1]</sup> ले आये।

70. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर से संशय में पड़ गया। और उन से दिल में भय का अनुभव किया। उन्होंने कहा: भय न करो। हम लूत<sup>[2]</sup> की जाति की ओर भेजे गये हैं।

71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी हो कर सुन रही थी। तो वह हँस पड़ी<sup>[3]</sup>, तो उसे हम ने इसहाक (के जन्म) की शुभ सूचना<sup>[4]</sup> दी। और इसहाक के पश्चात् याकूब की।

72. वह बोली: हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ, और मेरा यह पति भी बूढ़ा है। वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है।

73. फरिश्तों ने कहा: क्या तू अल्लाह के

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الْإِن شُودَا كَفَرُوا وَآرَاهُمَا  
الْأَبْعَدُ الشُّوَدَّ ۚ

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا سَلَامًا  
قَالَ سَلَامٌ قَمَالِيثَ أَن جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِينٍ ۖ

فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَّرَهُمْ وَوَجَسَ  
مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ  
لُوطٍ ۚ

وَأَمْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَتَرْتَاهَا يَأْسُخًا  
وَمِنْ ذُرِّيَّتٍ لَّهَا يَسْحَقٌ ۖ

قَالَتْ يَوَيْلَ لِي ۖ أَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلٌ  
شَيْخَانٌ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۚ رَحِمَتُ اللَّهِ وَبَرَكَتُهُ

1 अर्थात् अतिथि सत्कार के लिये।

2 लूत अलैहिस्सलाम को भाष्यकारों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भतीजा बताया है, जिन को अल्लाह ने सदूम की ओर नबी बना कर भेजा।

3 कि भय की कोई बात नहीं है।

4 फरिश्तों द्वारा।

आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अल्लाह की दया तथा सम्पन्नता है, निःसंदेह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।

عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَبِيدٌ مَّحْبُودٌ ۝

74. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभ सूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा।<sup>[1]</sup>

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَى  
يَحْمِلُ لَنَا نَارِي قَوْمِ لُوطٍ ۝

75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहने वाला था।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۝

76. (फरिश्तों ने कहा): हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ो, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश<sup>[2]</sup> आ गया है, तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ  
رَبِّكَ وَاتَّبِعْ أَمْرَهُمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝

77. और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया। और कहा: यह तो बड़ी विपत्ता का<sup>[3]</sup> दिन है।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئْتِ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ  
دُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ مَّعْصِيَةٌ ۝

78. और उस की जाति के लोग दोड़ते हुये उस के पास आ गये। और इस

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا

1 अर्थात् प्रार्थना करने लगा कि लूत की जाति को अभी संभलने का और अवसर दिया जाये हो सकता है वह ईमान लायें।

2 अर्थात् यातना का आदेश।

3 फरिश्ते सुन्दर किशोरों के रूप में आये थे। और लूत अलैहिस्सलाम की जाति का आचरण यह था कि वह बालमैथुन में रुचि रखती थी। इसलिये उन्होंने उन को पकड़ने की कोशिश की। इसीलिये इन अतिथियों के आने पर लूत अलैहिस्सलाम व्याकुल हो गये थे।



से पूर्व वह कुकर्म<sup>[1]</sup> किया करते थे। लूत ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी<sup>[2]</sup> पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अतः अल्लाह से डरो, और मेरे अतिथियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।

79. उन लोगों ने कहा: तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं<sup>[3]</sup> तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

80. उस (लूत) ने कहा: काश मेरे पास बल होता! या कोई दृढ़ सहारा होता जिस की शरण लेता!

81. फरिश्तों ने कहा: हे लूत! हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फरिश्ते) हैं। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रातः काल है। क्या प्रातः काल समीप नहीं है?

82. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने उस बस्ती को तहस नहस

يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ قَالَ يَفْقَهُ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ  
أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ فِي صَيْفِي  
أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۝

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ  
وَأِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا تُرِيدُ ۝

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ  
شَدِيدٍ ۝

قَالُوا لَوْلَا رَأَىٰ رَسُولَ رَبِّكَ لَنَاصِلُوا إِلَيْكَ  
فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ  
مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرَاتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا  
أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ  
الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۝

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَاهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا

1 अर्थात् बालमैथुन। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात् बस्ती की स्त्रियाँ। क्यों कि जाति का नबी उन के पिता के समान होता है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

3 अर्थात् हमें स्त्रियों में कोई रुचि नहीं है।

कर दिया। और उन पर पकी हुई कंकरियों की बारिश कर दी।

83. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह लगायी हुयी थीं। और वह<sup>[1]</sup> (बस्ती) अत्याचारियों<sup>[2]</sup> से कोई दूर नहीं है।

84. और मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (बंदना) करो। उस के सिवा कोई तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल में कमी न करो।<sup>[3]</sup> मैं तुम्हें सम्पन्न देख रहा हूँ। इसलिये मुझे डर है कि तुम्हें कहीं यातना न घेर ले।

85. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को उन की चीजें कम न दो, तथा धरती में उपद्रव फैलाते न फिरो।

86. अल्लाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिये अच्छी है, यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।

87. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! क्या तेरी नमाज़ (इबादत) तुझे आदेश दे रही है कि हम उसे त्याग दें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? अथवा अपने धनों में जो चाहें करें?

عَلَيْهَا حِجَارَةٌ مِّنْ سِجِّيلٍ مُّنْضُودٍ ۝

مُسَوَّمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ  
بَبَعِيدٍ ۝

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا  
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنَ الْوَعْدَةِ وَلَا تَنْقُصُوا  
الْمِكْيَالَ وَالْهَيْزَانَ إِنِّىْ أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّىْ  
أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۝

وَيَقُومُوا أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْهَيْزَانَ بِالْقِسْطِ  
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتَوُوا  
الْأَرْضَ مُفْسِدِينَ ۝

بَقِيتُ اللّٰهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا  
عَلَيْكُمْ بِحَافِظٍ ۝

قَالُوا يٰشُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَّتْرِكَ  
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَأَنْ نَّفْعَلَ فِىْ أَمْوَالِنَا مَا نَشَآءُ  
إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝

1 अर्थात् सदूम, जो समूद की बस्ती थी।

2 अर्थात् आज भी जो उन की नीति पर चल रहे हैं उन पर ऐसी ही यातना आ सकती है।

3 शुऐब की जाति में शिर्क (मिश्रणवाद) के सिवा नाप तौल में कमी करने का रोग भी था।

वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है!

88. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ?) मैं नहीं चाहता कि उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ। और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अब्बाह के योगदान पर निर्भर करता है। मैं ने उसी पर भरोसा किया है, और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ।
89. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।
90. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।
91. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।

قَالَ يَقَوْمِ اَرَايْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا اُرِيدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلَىٰ مَا اَنْتُمْ عَنْهُ اِنْ اُرِيدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَالْيَهُ اُنِيبُ ۝

وَيَقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي اَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا اَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ اَوْ قَوْمَ هُودٍ اَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝

وَاَسْتَغْفِرُكُمْ وَاَرْسَلَكُمْ تَوَّابًا اِلَيْهِ اِنْ رَّبِّي رَحِيْمٌ وَّذُوْدٌ ۝

قَالُوا يَشْعِبُ مَا نَنْفَعُهُ كَثِيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ وَاِنَّا لَنَرِيْكَ فِتْنًا ضَعِيْفًا وَلَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝



92. शूऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अल्लाह से अधिक भारी हैं? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है?<sup>[1]</sup> निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।

93. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

94. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शूऐब को, और जो उस के साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औधे मुँह पड़े रह गये।

95. जैसे वह कभी उन में बसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।

96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।

قَالَ يٰٓقَوْمِ اَرِهٰطِيْ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللّٰهِ  
وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وِزَآءًا كُمْ ظَهْرِيْٓ اِنْ رَّبِّيْ بِمَا  
تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝

وَيٰٓقَوْمِ اَعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ سَوْفَ  
تَعْلَمُوْنَ ۚ مَنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ  
كَآذِبٌ وَارْتَبِعُوْا اِلَىٰ مَعْمَرٍ رَّحِيْبٌ ۝

وَلَمَّا جَآءَ اٰمُرُنَا جَعَلْنٰ سَعِيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا  
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَاَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا  
الصِّخْرَةَ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دِيَارِهِمْ جُثَمِيْنَ ۝

كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اِلَّا بُعْدَ الْمَدْيَنِ كَمَا  
بَعَدَتْ نَمُوْدٌ ۝

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِآيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ  
مُّبِيْنٍ ۝

1 अर्थात तुम मेरे भाई बन्धु के भय से मेरे विरुद्ध कुछ करने से रुक गये तो क्या वह तुम्हारे विचार में अल्लाह से अधिक प्रभाव रखते हैं?

97. फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्होंने ने फिरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फिरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।
98. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?
99. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?
100. हे नबी! यह उन बस्तियों के समाचार है जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।
101. और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, उन के कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया, और उन्होंने ने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।<sup>[1]</sup>
102. और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, बस्ती को

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمۡ فَاتَّبَعُوۡا أَمْرَ  
فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيۡدٍ ۝۹

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ  
وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُوۡدُ ۝۱۰

وَاتَّبَعُوۡا فِي هٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَبۡسَ  
الرَّوۡدُ الْمَوْرُوۡدُ ۝۱۱

ذٰلِكَ مِنْ اٰنۡبَاۡءِ الْقُرٰٓى نَقَّصۡهُ عَلَیْكَ مِنْهَا قَابِلٌ  
وَحٰصِیۡدٌ ۝۱۲

وَمَا ظَلَمْنَاهُمۡ وَلٰكِنۡ ظَلَمُوۡا اَنۡفُسَهُمۡ فَمَا اَغْنٰتِ  
عَنۡهُمُ اِلٰهُهُمُ الَّذِیۡ يَدْعُوۡنَ مِنْ دُوۡنِ اللّٰهِ  
مِنْ شَیْءٍ لِّمَآجَاۡ اٰمُرِّیۡكَ وَمَا زَادُوۡهُمْ غَیۡرَ  
تَیۡیۡیۡپٍ ۝۱۳

وَكَذٰلِكَ اَخَذۡرَبَّكَ اِذَا اَخَذَ الْقُرٰٓى وَهٰی  
ظَالِمَةً اِنَّ اَخَذَهَا الْیَمُّ شَدِیۡدٌ ۝۱۴

1 अर्थात् यह जातियाँ अपने देवी-देवता की पूजा इसलिये करती थी कि वह उन्हें लाभ पहुँचायेंगे। किन्तु उन की पूजा ही उन पर अधिक यातना का कारण बन गई।

पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दुःखदायी और कड़ी होती<sup>[1]</sup> है।

103. निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरो। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।
104. और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।
105. जब वह दिन आ जायेगा तो अल्लाह की अनुमति बिना कोई प्राणी बात नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।
106. फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे, उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।
107. वे उस में सदावासी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।
108. और जो भाग्यवान हैं, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۖ  
ذَلِكَ يَوْمُ مَجْمُوعٍ لَهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمُ  
مَشْهُودٍ ۝

وَمَا تُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدُّودٍ ۝

يَوْمَ لَا يَأْتُ لَكُمْ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ فَيَبْهُمْ  
شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فَيُنْفَخِ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ  
وَشَهيقٌ ۝

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ  
إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فَيُنْفَخِ الْجَنَّةُ خَلِيدِينَ فِيهَا  
مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ  
عَطَاءٌ غَيْرَ مُجْدُودٍ ۝

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि अल्लाह अत्याचारी को अवसर देता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उस से बचता नहीं, और आप ने फिर यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 4686)



109. अतः (हे नबी!) आप उस के बारे में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते<sup>[1]</sup> रहे हैं। वस्तुतः हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।

110. और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात<sup>[2]</sup> निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे<sup>[3]</sup> उस के बारे में संदेह और शंका में हैं।

111. और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।

112. अतः (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये। और वह भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न<sup>[4]</sup> करो क्योंकि वह (अल्लाह)

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءُ  
مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ  
وَإِنَّا لَمَوْفُوهُمْ نُصِيبُهُمْ غَيْرَ مَنقُوصٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ذُلُولًا  
كَلِمَةً سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُوصَى بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ  
لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝

وَإِنْ كُلًّا لَمَّا لَوْ فَيَنْهَضُهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالُهُمْ إِنَّهُمْ بِمَا  
يَعْمَلُونَ خَبِيرُونَ ۝

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ  
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात् इन की पूजा निर्मूल और बाप-दादा की परम्परा पर आधारित है, जिस का सत्य से कोई संबन्ध नहीं है।

2 अर्थात् यह कि संसार में प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार कर्म करने का अवसर दिया जायेगा।

3 अर्थात् मिश्रणवादी कुर्आन के विषय में।

4 अर्थात् धर्मदिश की सीमा का।

तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

113. और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

114. तथा आप नमाज़ की स्थापना करें, दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने<sup>[1]</sup> पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते<sup>[2]</sup> हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

115. तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

116. तो तुम से पहले युगों में ऐसे सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे, जो धन-धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बन कर रहे।

وَلَا تَرْكُؤُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُفْعًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ الشَّرَّاتِ ذَلِكَ ذِكْرُكَ لِلَّذِينَ يَذْكُرُونَ ﴿١١٤﴾

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَجْبَيْنَا مِنْهُمْ ۖ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

1 नमाज़ के समय के सविस्तार विवरण के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 78, सूरह ताहा, आयत: 130, तथा सूरह रूम, आयत: 17-18।

2 हदीस में आता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: यदि किसी के द्वार पर एक नहर जारी हो जिस में वह पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उस के शरीर पर कुछ मैल रह जायेगा? इसी प्रकार पाँचों नमाज़ों से अल्लाह भूल-चूक को दूर (क्षमा) कर देता है। (बुख़ारी: 528, मुस्लिम: 667) किन्तु बड़े बड़े पाप जैसे शिर्क, हत्या इत्यादि, बिना तौबा के क्षमा नहीं किये जाते।

117. और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।

118. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।

119. परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है<sup>[1]</sup> और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिन्हों तथा मानवों से अवश्य भर दूँगा<sup>[2]</sup>।

120. और (हे नबी!) यह नबियों की सब कथाएँ हम आप को सुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़ कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।

121. और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।

122. तथा तुम प्रतीक्षा<sup>[3]</sup> करो, हम भी

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهِلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصِلُونَ ﴿١١٧﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً  
وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

إِلَّا مَن دَجِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ  
رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ  
أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ الرُّسُلِ مَا نَشِئْتُمْ بِهِ  
فُؤَادَكَ وَجَاءَكُم فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى  
لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١٢٠﴾

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ  
إِنَّا أَعْمَلُونَ ﴿١٢١﴾

وَأَنْتُمْ لَهَا مُنْقَضُونَ ﴿١٢٢﴾

1 अर्थात् एक ही सत्धर्म पर सब को कर देता। परन्तु उस ने प्रत्येक को अपने विचार की स्वतंत्रता दी है कि जिस धर्म या विचार को चाहे अपनाये ताकि प्रलय के दिन सत्धर्म को ग्रहण न करने पर उन्हें यातना का स्वाद चखाया जाये।

2 क्योंकि इस स्वतंत्रता का ग़लत प्रयोग कर के अधिकतर लोग सत्धर्म को छोड़ बैठे।

3 अर्थात् अपने परिणाम की।



प्रतीक्षा करने वाले हैं।

123. अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीजों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (वन्दना) करें, और उसी पर निर्भर रहें। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ  
كُلُّهُ فَاَعْبُدُوْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا  
تَعْمَلُوْنَ ۝

